जयपुर का चित्ररंजन

डॉ० विभूति शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, चित्रकला विभाग
एम०एच० पी०जी० कॉलेज, मुरादाबाद
ईमेलः svibhuti892@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ० विभूति शर्मा

जयपुर का चित्ररंजन

Artistic Narration 2021,
Vol. XII, No. 2,
Article No. 32 pp. 212-217

https://anubooks.com/artistic-narration-no-xii-no-2-july-dec.-2021/

सारांश

जयपुर शैली का कला सौन्दर्य राजस्थान के कण–कण में व्याप्त है, चित्रों की लयात्मकता,संयोजन, रंग,रेखाओं का वर्णन किया गया है. गणेश पोल, आमेर के मंदिर के ग्यारह सुँड वाले हाथी, कृष्ण. राधिका का आलौकिक रूप व व्यक्ति चित्रों, कालियामर्दन, भगवान शिव का मिश्रित चित्र आदि चित्रों की विशेषताओं का उल्लेख किया है व स्वरचित पक्तियों से भी जयपुर के चित्र.सौन्दर्य का उल्लेख करने का प्रयास किया है।

विश्वकर्मा के द्वारा रची गई इस सुन्दर सृष्टि में अत्यन्त सौन्दर्य व्याप्त है। विश्वकर्मा ने अपनी कलाकृति से जो दुनिया बसाई है उसमें सबसे ज्यादा जो तत्व है वह है "कला तत्व"। नेत्रए मुख एवं वाणी का उपयोग करते हुये जिस प्रकार ब्राह्मण जिन वेदों. मन्त्रों का उच्चारण करते हुये यज्ञ में आहुति प्रदान करते हैं, उसी प्रकार कलाकार अपने मन के भावों को रेखाओं और रंगों के माध्यम से मन्त्रों की भांति अपने चित्रों को भावनाओं की आहुति से ओतप्रोत करता है।

संस्थापक महाप्रभु विश्वकर्मा इस अदभुत विश्व की रचना करके स्वयं अपने ऐश्वर्य से इस ब्रह्माण्ड के कण.कण में व्याप्त हैं। उनके इसी कण का भाग है. हमारा रंग–बिरंगा राजस्थान अपनी अनूठी कला की धरोहर लिये, जिससे मैं बहुत प्रभावित हुई। राजस्थान का क्षेत्र बहुत फैला हुआ है किन्तु मैंने उसके गुलाबी शहर "जयपुर" को चुना है। मैंने जयपुर की कलाकृतियों को हृदयंगम भाव से अपनाया है और आपके समक्ष उसके चित्रों की कुछ विशेषतायें अंकित कर रही हूँ।

"आइने अकबरी" में अबुल फजल ने कहा है कि "हिन्दु चित्रकारों के चित्र हमारी भावना से कहीं ऊँचे हैं। सारे संसार में ऐसे बहुत कम कलाकार हैं, जो उनके समकक्ष हों। जयपुर की चित्राकृतियों का विकास सदैव पंकज की भाँति पुष्पित होता रहा हैं भारमल, मानसिंह, प्रताप सिंह, रामसिंह, ईश्वर सिंह, सवाई जयसिंह आदि कछवाहा राजाओं के आश्रय में कलाकारों ने चित्रण किया।

"राजस्थानी चित्रकला" में लिखी कुछ पंक्तियाँ भी मेरे मन को छूकर जाती हैं-

मैं जयपुर शैली
विविध विलासों की जननी
महलों की रानी
कहता है जग रूप देख
मुझको मुगलानी।

जयपुर एक के मानिन्द है, जहाँ स्वप्नलोक को जाती हुई सीढ़ियों के ऊपर सितारों भरी में झरोखे और मेहराबदार रंग-बिरंगी खिड़कियाँ हैं। दूध सी धुली हुई छतरियों और सोने के कलश है।

जयपुर कलम्, इसकी स्थापना के साथ 18वीं शताब्दी के पूर्वाद्ध से प्रारम्भ हुई। जयपुर चित्रशैली की समृद्ध परम्परा भावपुरा, मौजमाबाद, महाराजा मानसिंह महल, आमेर, महाराजा मानसिंह की छतरी से प्रारम्भ होकर इतनी अधिक विस्तारित हुई कि जयपुर के अनेक ग्रन्थ चित्र भागवतपुराण, यशोधर चरित्र, बिहारी सतसई, दुर्गा सप्तशती, कृष्ण लीला, राग रागिनी अनेक हवेलियों व महलों, मन्दिरों आदि के चित्रों, मानवाकारों तथा व्यक्ति चित्रों के आलेखनों से सुसज्जित परिलक्षित होते हैं।

मिर्जा राजा जयसिंह स्थापत्य निर्माण में रूचि रखते थे। उन्होंने 'दीवाने-ए-आम', 'गणेशपोल', 'सुखमन्दिर', 'शीशमहल' आदि का निर्माण कराया इनकी महारानी चंद्रवती जी के लिये 'रसिक प्रिया' रचित की गयी थी।

जयपुर में गणेश पोल के मुख्य द्वार पर गणेश भगवान का सुन्दर चित्र है जिसके दोनों ओर पुष्पित पौधे अलंकरणात्मक रूप में चित्रित हुये हैं। इनके अतिरिक्त संपूर्ण द्वार फूल-पत्तियों के आलेखनों से पूरित हैं। गणेश भगवान के चारों ओर पुष्पों को विभिन्न ढंग से ज्यामितिक आकारों में संयोजित किया गया है।

गणेश जी आकृति के दोनों ओर हरी पत्ती के समान वृक्ष का चित्रण ईरान से ही आया है। मानवाकारों, पशु-पक्षियों, स्थापत्य चित्रण व अन्य रूपों का भी सुन्दर अंकन किया गया है।

कोयल का पंचम् स्वर तो लोक गीतों और काव्य में खूब वर्णित हुआ है तोतों तथा अन्य छोटे पक्षियों को भी वे भली भाँति चित्रित का सके।

1731 ई. में आमेर के सिंह जी के मन्दिर में इन्द्र की यात्रा का चित्र है जिसमें इन्द्र को ग्यारह सूंड वाले हाथी पर ठाट--बाट के साथ अंकित किया गया। हाथी की सूडों को बहुत ही कलात्मक ढंग से चित्रित किया गया है।

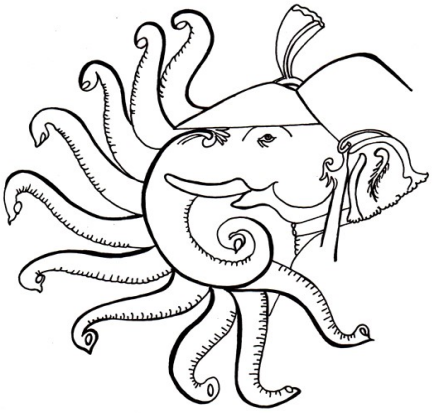

एक अन्य बहुत ही सुन्दर चित्र है-रासमंडल। लगभग 1779-1803 ई. इस चित्र में भगवान कृष्ण और राधिका का अलौकिक नृत्य है। इस युगल के चारों ओर गोपियाँ मण्डलाकारों में नृत्य कर रही हैं। इस चित्र की आकृतियों के चेहरे दिव्य युगल की ओर हैं, सम्पूर्ण चित्र लय और प्यार में डूबने का निर्देश देता है। चित्र की रूप व्यवस्था बहुत कठिन व आकर्षक है। राधा और कृष्ण केन्द्र में बहुत ही सौन्दर्यपूर्ण लग रहे हैं। उनके मुखमंडल स्निग्धता से भरे हुये है, नयन प्रेम की परिभाषा को दर्शा रहे हैं। यह दैवीय जोड़ा अपनी अलौकिकता की ओर संकेत कर रहा है।

प्रत्येक उपमान में अपनी विशेषता, किसी में करूण की व्यंजना है, तो किसी में चंचलता की किसी में कोमलता और बाह्म सौन्दर्य की प्रतिष्ठा है तो किसी में रूप और आकार "माधुर्य"। चित्रकार साधना में लीन होकर चित्रों का अंकन करता है।

व्यक्ति चित्र भी बहुत अमूर्त बनाये गये है महाराजा माधोसिंह का व्यक्ति चित्र आभामण्डल युक्त मुखमण्डल सहित हाथ में तलवार लिये खड़े चित्रित किया गया है। महाराजा माधोसिंह ने अंलकारिक आलेखनों से युक्त अलंकृत पगड़ी, जामा कमर में पटके पर ढाल व तलवार बँधी है, सुनहरी पगड़ी के पीछे लाल मोतियों की झालर लटक रही है। जामे का अलंकरण के सुनहरे और लाल रंग से हुआ है अलंकरों के अन्तर्गत गले में मुक्त मालायें मणिबन्ध एवं झुमको का अंकन विशेष रूप से हुआ है। पीछे हरित वर्ण की पृष्ठभूमि जिससे सलेटी, लाल, सफेद और नीले बादल हैं। रंग योजना अत्यन्त शांत एवं आर्कषक है, हरित वर्ण एवं श्वेत कर्ण की प्रधानता है।

सचित्र पाण्डुलिपि ''सरस रस ग्रन्थ'' जो शिवदास राय द्वारा रचित और भाषा ब्रजभाषा है। 1737 ई. में पाण्डुलिपि में कृष्ण विषयक 39 चित्र पृष्ठों पर अंकित है।[3]

नदी किनारे श्री कृष्ण का गोपियों के साथ चित्र है। इसमें श्री कृष्ण नदी किनारे खड़े हुए हैं,उनके पीछे एक परिचारक खड़ा हुआ है। श्रीकृष्ण के सामने कुछ स्त्रियाँ खड़ी व बैठी व स्नान करती हुई चित्रित हैं। एक स्त्री मटके में पानी भर रही है कुछ मटका सिर पर रखकर जा रही हैं। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि नदी में जल भर के जा रही हैं। चित्रकार ने पृष्ठभूमि में वृक्षों को पंक्तिबद्ध व अपनी कल्पना के अनुसार श्रंग व तूलिका से नया आयाम दिया है। जिससे वृक्ष चित्रण लयात्मकता को प्राप्त है। वृक्ष श्रेष्ठता से अपने सौन्दर्य की अभिव्यंजना कर रहे हैं। श्रीकृष्ण का मुखमण्डल एक चश्म और आकर्षक चित्रित हैं, उनके नेत्र माँसल मीनाकृत है। उनके केशों की कुछ लटे कानों के पास से कंधों तक वलयित चित्रित हैं, साधारणतया आकृति न लम्बी है न छोटी। श्रीकृष्ण को लम्बा जामा धारण किये चित्रित किया है। पगड़ी, मोतियों, कलगी व तुर्रों से सजी हुई है।

स्त्रियों की आँखें मीनाकृत, गोल चेहरे, ललिमा युक्त मोटे अधर, यौवन से भरपूर हैं। स्त्रियों ने घाघरा-चोली धारण कर, सिर पर ओढ़नी ओढ़कर और भी लावण्य से भरी हुई हैं। मुद्राएँ सुन्दर व भावपूर्ण हैं।

वेदों में सौन्दर्य दिव्य और लौकिक, ऐन्द्रिक और आत्मिक रूपों का विवेचन प्राप्त है।[4] जिनमें अभिव्यंजना शक्ति होती है, जो पारस्परिक सम्बन्धों में संश्लिष्ट होते हैं और जो एक दिव्य उपस्थिति का आह्वान है।[5]

महाराजा मानसिंह की छतरी में कालियादमन जो 1620 ई. में निर्मित हुई थी[6] का चित्र है, जिसमें आलेखन भी बनाया गया है। आलेखन में रेखायें विभिन्न चाप बनाती हैं। रेखायें विभिन्न मोड़ लेकर पुष्पों व पत्तियों का निर्माण करती हैं। चित्र में प्रवाही रेखाओं का प्रयोग सुन्दरता के साथ किया गया है। चित्र के हाशिये में व सर्प पर भगवान कृष्ण नृत्य करते हुए वंशी बजा रहे हैं, नारी रेखाँकन में भी प्रवाही रेखाओं का प्रयोग किया गया है तल विभाजन के लिए लम्बत् रेखा को आधार बनाया गया है, उस लम्बत् रेखा के नीचे मछलियों का रेखाँकन दृष्टिगत् है। भगवान कृष्ण के हाथों व पैरों की मुद्रा का रेखाँकन बड़ा मोहक व लयात्मक है।

प्लेटिनस सौन्दर्य को एक अलौकिक अनुभूति मानते हैं।[7] जोन कीट्स का कथन है – कि सुन्दर वस्तु सदैव आनन्द देने वाली होती है। सौन्दर्य शास्त्र का विषय चित्रकार, दार्शनिक और तार्किक के विचार विनियम का है।[8]

परमशिव का चित्र है यह चित्र अपने आप में बहुत अनुठा है। इस चित्र में शिव के शरीर को पुरूष और स्त्री के सम्मिश्रण के साथ पार्श्वचित्र में शिव के अंगों पर फर्णधर लिपटा हुआ व फर्णधर के सिर के रूप में उभारा है जो कैलाश पर्वत की ऊँचाई के समान है व उनके सिर के चारों ओर चमकीली किरणों का पुँज है, वह कमल के पुष्पों से घिरा हुआ है, जो चमकीले रंजन से दीप्तिमान है। यह चित्र उद्बोधक और प्रभावशाली है, जो सुन्दर संयोजन के साथ दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत है। भगवान शिव का अत्यन्त सौन्दर्यात्मक चित्र है।

जयपुर शैली में अनेक सुन्दर चित्र हैं। बस कुछ चित्रों को ही आपके समक्ष प्रस्तुत करने का प्रत्यन किया गया है। भारतीय चित्रकला को समस्त गुणों एवं विशेषताओं की अभिव्यक्ति करने वाली और भारतीय सौन्दर्य तथा दर्शन के मापदण्डों पर खरी उतरने जयपुर शैली भारतीय चित्रकला का चित्ररंजन करती है।

जयपुर शैली के लिये कुछ स्वरचित पंक्तियाँ कर रही हूँ-

गुलाबी गुलाबी है, इस जयपुर का वर्ण,
गुलाबी पंकज है, इस जयपुर का वर्ण
गुलाबी गुलाबी है, इस जयपुर का वर्ण,
हर पल खिला रहता है, सुनहरी धूप में
खिलते पंकज जैसा, सबको भाता है।
यही रंग चाहे देसी हो या विदेशी,
स्ब रच जाते हैं, इस रंग में,
अपलक देखते हैं, हम इसकी रचनाओं को,
बस ह्रदय करता है यहीं रह जायें सदा के लिये
यहीं रह जायें सर्वदा के लिये।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. डॉ. वन्दना जोशी, नाथद्वारा चित्र शैली, प्रकाशन राजस्थान ग्रन्थ अकादमी, प्रथम संस्करण 2010 पृष्ठ 1
2. विजयवर्गीय स्व. रामगोपाल, राजस्थानी चित्रकला, जयपुर शैली।
3. डॉ. रीता प्रताप, जयपुर की चित्रांकन परम्परा, प्रकाशन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, संस्करण, 2011, पृष्ठ सं. 69।
4. डॉ. हरिशंकर मिश्र, सौन्दर्यशास्त्रः स्वरूप एवं सम्भावनाएँ, राहुल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ, प्रथम संस्करण 2003, पृष्ठ सं.3।
5. वही पृष्ठ सं. 163।
6. Dr. R. K. Vashishth- An Inscription of Raja Man Singh Memorial At Amber, Publisher-Lalit Kala, New Delhi, Edition Volume-20.
7. डॉ. राजेन्द्र वाजपेयी – सौन्दर्य, प्रकाशन –मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, प्रथम संस्करण -1998, द्वितीय (आवृति) 2001, पृष्ठ सं.55।
8. हरीदत्त शर्मा-18वीं शताब्दी के भारत की चित्रकला में आलेखन, शोध-प्रबन्ध, 1975, पृष्ठ सं.-45।